# लब्बैक या हुसैन(अ०)

**ख़तीबे इन्क़ेलाब मौलाना सै० हसन ज़फ़र नक़वी साहब क़िब्ला, कराची**
**अनुवादः डॉ० आरिफ़ अब्बास**

अज़ादाराने हुसैन[अ०]!

अस्सलामु अलैइकुम वरह्मतुल्लाहि व बरकातुह

आशूर-ए-मुहर्रम गुज़र गया मगर इस मरतबा इस शान से गुज़रा कि तारीख़ ने देख लिया कि अज़ादाराने हुसैन[अ०] किस तरह से अपने अहद को पूरा करते हैं वह अहद जो अज़ादारों ने मादरे हुसैन[अ०] से किया है, वह अहद जो अज़ादारो ने अपने सैय्यदो सरदार हुसैन मज़लूम[अ०] से किया है, वह अहद जो मातमदारों ने शोहदा-ए-कर्बला के साथ किया है।

मुज़फ़्फ़राबाद से लेकर करबला-ए-कराची तक शीआने हैदरे कर्रार ने अपने लहू में ग़र्क़ होकर अज़ाए हुसैन[अ०] को अपने लहू की लाली अता कर दी।

हमारा सलाम हो उन अलमदारों पर जिन्होंने ज़ख़्मों से चूर-चूर होकर भी अलमे हज़रत अब्बास अलमदार[अ०] को झुकने नहीं दिया, सारी दुनिया गवाह है कि जब कराची में यज़ीदी बाक़ियात ने जुलूसे आशूरा पर भयानक हमला किया तो एक अलम भी अलमदारों ने झुकने नहीं दिया।

हमारा सलाम हो उन अज़ादारों और मातमी दस्तों पर जिनका रास्ता रोकने के लिए ये भयानक हमला किया गया था मगर हुसैन[अ०] के इन जाँनिसारों के पाये सिबात में हलकी सी भी लग़ज़िश नहीं आई। ये अज़ादार अपनी लाशें उठाते रहे, ज़ख़्मी उठाते रहे मगर जुलूसे अज़ा न रुकने पाया और तारीख़ी तुज़्को एहतेशाम के साथ अपनी मंज़िल तक पहुँचा।

अज़ादाराने हुसैन[अ०]! ये मुख़्तसर तहरीर एक तारीख़ी दस्तावेज़ के तौर पर पेश कर रहा हूँ इसे महफ़ूज़ रखियेगा ये सदियों बाद भी काम आयेगी इस तहरीर में उन हक़ाएक़ से पर्दा उठा रहा हूँ जिन पर मुताअस्सिब इन्तिज़ामिया पर्दा डालने की कोशिश कर रही है और हमेशा की तरह मज़लूमपर होने वाले ज़ुल्म को अपनी मर्ज़ी का रुख़ देने की कोशिश कर रही है ताकि हम पर होने वाले ज़ुल्म को लोग भूलकर दूसरे मसाएल में उलझ जाएं।

10 मुहर्रम बरोज़े आशूरा 1431[हि०] मुताबिक़ 28 दिसम्बर 2009[ई०] सुबह साढ़े आठ बजे नश्तर पार्क में मजलिसे आशूरा का इन्एक़ाद होता है बाद मजलिस लाखों अज़ादार नश्तर पार्क से एम०ए० जिनाह रोड पर जुलूस की सूरत में आते हैं जुलूस में दाख़िले के लिए सख़्त इन्तेज़ामात, कोई लाइटर भी लेकर जुलूस में दाख़िल नहीं हो सकता। नुमाइश जहाँ एम०ए० जिनाह रोड का आग़ाज़ होता है उसके दोनों तरफ प्लाज़े, पेट्रौल पम्प, सिनेमा और मुख़तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र की मसाजिद मौजूद हैं जुलूस आगे बढ़ रहा है सदर की तरफ जो कराची का सबसे बड़ा बल्कि शायद पाकिस्तान का सबसे बड़ा बाज़ार है जुलूस का अगला हिस्सा सदर से मुड़ता है तिब्बत सेण्टर की तरफ जहाँ इमामिया स्टूडेन्ट्स आरग़्नाइज़ेशन के जवान अज़ादारों के लिए नमाज़े ज़ोहरैन का इन्तिज़ाम करते हैं तक़रीबन दो बजे नमाज़ होती है। वाज़ेह रहे कि सदर में पाकिस्तान की सबसे बड़ी इलेक्ट्रानिक मार्केट और तिब्बत सेण्टर पर पाकिस्तान की सबसे बड़ी स्पेयर पार्ट्स की मार्केट है। ३ बजे के बाद जुलूस तिब्बत सेण्टर से आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता है, सईद मंज़िल, रेडियो पाकिस्तान, उर्दू बाज़ार,

जामे क्लाथ मार्केट, ईदगाह क्लाथ मार्केट इसके अलावा दोनों तरफ़ हज़ारों दुकाने और दर्जनों प्लाज़े।

अब चार बज रहे हैं जुलूस का अगला हिस्सा लाइट हाउस के क़रीब हो रहा है और बाक़ी जुलूस जिसमें लाखों अज़ादार मातम व नौहा में मश्गूल हैं वह पीछे है और बन्दर रोड, तिब्बत सेण्टर, सदर खचाखच अज़ादारों से भरा हुआ है आख़िरी सिरा भी नुमाइश पर है।

चार बज कर तेरह मिनट पर लाइट हाउस के सामने जुलूस के अगले हिस्से में जहाँ आगे-आगे स्काउट्स हैं और उनके बिलकुल पीछे अलम और शबीहें हैं।

अचानक बाएं जानिब धमाका हुआ इन्सानी आज़ा फ़िज़ाओं में बिखरने लगे। मगर सारी दुनिया के मीडिया ने दिखाया अलमदारों ने अलम झुकने नहीं दिये लमहों में ये ख़बर जुलूस के आख़िरी हिस्से तक पहुँच गई।

मगर ये क्या जुलूस तो पाँच किलोमीटर पीछे तक फैला हुआ था ये सारी आग सिर्फ डेन्सोहाल से बोलटन मार्केट तक क्यों लगी? अब मैं इसी सवाल का जवाब आपको देने जा रहा हूँ।

जब धमाका हुआ स्काउट्स और दीगर मोमिनीन की लाशें उठाने और ज़ख़्मियों को अस्पताल पहुँचाने में लग गये मगर चन्द मिनट के अन्दर-अन्दर कुछ लोग आगे भागते नज़र आते रहे जिनके हाथों में पेट्रोल के डब्बे, केमिकल, फ़ासफ़ोरस और सरिये हथौड़े हैं और ये गिरोह जिनमें अकसर मुँह पर ढाटे बाँधे हुए हैं अचानक ही दुकानों और मार्केट पर टूट पड़ते हैं और देखते ही देखते आग के शोले आसमान से बातें करने लगते हैं।

अज़ादार मुसलसल जुलूस आगे बढ़ा रहे हैं जैसे ही अज़ादार बोलटन मार्केट पर पहुँचते हैं जहाँ से जुलूस हुसैनिया ईरानियान जाने के लिए दाएं तरफ़ मुड़ता है अचानक ही सामने टावर की तरफ़ से उन पर फ़ायरिंग शुरु कर दी जाती है ताकि उन्हें बोलटन मार्केट की पास ही रोक दिया जाए और बोलटन मार्केट जिसमें आग लग चुकी थी वह सारा इल्ज़ाम अज़ादारों पर थोंप दिया जाए।

अब मैं आपके सामने और हर बाशऊर और साहेबे इन्साफ़ शख़्स के सामने चन्द सवालात रखता हूँ जिसके बाद दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा।

1- अगर ये घिराव जलाव अज़ादारों ने किया था तो फिर सारा जुलूस जो बन्दर रोड, सदर, तिब्बत सेण्टर और नुमाइश तक मौजूद था उसने वहाँ घिराव जलाव क्यों नहीं किया? अगर वह चाहते तो क्या क्लाथ मार्केटें, इलेक्ट्रानिक मार्केटें, स्पेयर पार्टस की मार्केटें, सिनेमा, पेट्रोल पम्प्स कुछ महफ़ूज़ रह सकता था? मगर ऐसा नहीं हुआ क्योंकि अज़ादार इन रास्तों से गुज़िश्ता 60 साल से जा रहे हैं और यहाँ के अवाम और उनके जान व माल हमेशा महफ़ूज़ रहे हैं।

2- डेन्सू हाल और बोलटन मार्केट के इलाक़े के अलावा अज़ादारों ने वहीं पर मौजूद म्युनिसिपल कारपोरेशन, सिटी कोर्ट्स, मसाजिद और मदारिस को क्यों नज़रअन्दाज़ किया?

3- फूल प्रूफ़ इन्तिज़ामात के दावेदार अचानक सड़कें छोड़कर कहाँ फ़रार हो गये?

4- सी०सी०पी०ओ० ने फ़ौरन बयान दाग़ दिया कि खुदकश हमला है और जिस सर को खुदकश हमला आवर का सर क़रार दिया वह एक स्काउट्स का बदन निकला जिसके घर के दीगर अफ़राद भी शहीद हुए उस स्काउट का नाम है मुज़म्मिल शाह।

5- शहीद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जो रेंर्जस का सिपाही है उसके लिए सितारए जुराअत का एलान किया गया है कि वह खुदकश हमला आवर से लिपट गया था और 31 दिसम्बर, 13 मुहर्रम के अख़बारात में आई०जी० सिंध का बयान छपता है कि उसे खुदकश हमला कहना क़ब्ल अज़ वक़्त है?

6- डी०आई०जी० साउथ 13 दिसम्बर को यही बयान दोहराते हैं कि अभी तक साबित नहीं हो सका है कि ये खुदकश हमला था या रिमोट हमला? (इस वक़्त भी जब मैं ये तहरीर कर रहा हूँ चैनलों पर डी०आई०जी० का यही बयान चल रहा है।)

7- बोलटन मार्केट और दीगर ताजिर तन्ज़ीमें

एलान करती हैं कि हमें मार्केट और दुकानें शिफ़्ट करने के नोटिस जारी किये गये थे और हम इस पर राज़ी नहीं थे।

8- मुख़तलिफ़ ताजिर तनज़ीमों के मुताज़ाद बयान आना शुरु हो जाते हैं ताजिरों की तनज़ीमें एक दूसरें के ख़िलाफ़ बयान देना शुरु कर देती है?

9- लेकिन एक ताजिर भी अज़ादारों पर इल्ज़ाम नहीं लगाता बहरहाल इस बिरादरी का अरबों रुपये का नुक़सान तो हुआ है ना?

यहाँ हम अपनी ताजिर बिरादरी को भी ये यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि हम अपने शोहदा के ग़म में आपके नुक़सानात को नहीं भूले हैं हम आपके दुख में बराबर के शरीक हैं और आप ने क़ुबूल किया तो हम अपनी मिल्लत में आपके लिए Fund Raising (फण्डरेज़िंग) मुहिम चलाने को तैयार हैं।

अज़ादाराने हुसैन! हक़ीक़त यही है कि हमारी अज़ादारी को एक भयानक साज़िश को अमल दरअमाद करने के लिए चारा बनाने की कोशिश की गई। ताकि एक तीर से कई शिकार किये जाएं आप ने देख लिया कि फ़ौरन ही एक नासिबी टोला जुलूसों को रुकवाने की सदाएं बलन्द करने लगा ये वही टोला है जो रोज़ मुल्क में कहीं न कहीं धरने देता है रेलियाँ निकालता है और पूरे पाकिस्तान को डिस्टर्ब रखता है ख़ास तौर पर कराची से इनको खुदा वास्ते का बैर है क्योंकि उन्हें कराची और कराची वालों से कोई हमदर्दी नहीं बस ये अपनी सियासी मुख़ालिफ़तों और नफ़रतों का बुख़ार कराची से निकालना चाहता है। बजाए इसके कि हमारे ज़ख़्मों पर मरहम रखा जाता, इन्तिज़ामिया ने अपने शैतानी मक़ासिद को अमली जामा पहनाने के लिए हमारे ज़ख़्मोंपर नमक पाशी शुरु कर दी बजाए इसके कि हमारी क़ौम जिस आग में जल रही है उसे बुझाने की कोशिश की जाती उस पर और मज़ीद तेल छिड़का जाने लगा और आज ये कोई नई बात नहीं हुई हम गुज़श्ता तीस बरस से देख रहे हैं कि हमारे घर जलते हैं और सज़ाएं भी हमें मिलती हैं मसाजिद और इमाम बारगाहें हमारी जलें कोड़े भी हमें ही मारे जाते हैं जनाज़े हमारे हम उठाते रहे और ख़ुफ़िया हाथ हमारे जनाज़ों को सुबूताज़ करके हमें तख़रीबकार बनाकर पेश करते रहे लेकिन अब ऐसा नहीं होने दिया जायेगा मिल्लते जाफ़रिया पाराचुनार से कराची तक बेदार हो चुकी है इन साज़िशों ने हमारी आँखें खोल दी हैं आज तक दुश्मन हमारे आपस के इख़्तेलाफ़ात से फ़ायदा उठाता रहा अब ऐसा नहीं होगा कराची हो या पाराचुनार, मुज़फ़्फ़राबाद हो या कोएटा, डेरा इस्माईल ख़ान हो या हिंगो शीआने हैदरे कर्रार बेदार हो चुके हैं।

ऐ अज़ादाराने फ़र्ज़न्दे ज़हरा[अ०] अपनी सफ़ों से काली भेड़ों को निकाल दीजिये किसी को इख़्तेलाफ़ी बात न करने दीजिये आज हर आलिम, हर ख़तीब और हर ज़ाकिर की ज़िम्मेदारी है कि जिस ज़िक्रे हुसैन[अ०] ने उन्हें इज़्ज़त व शोहरत की मेराज दी है और जो चाहा वह दिया है उस ज़िक्रे हुसैन[अ०] की ख़ातिर हक़्क़े नमक अदा करे हर मजलिस में मिल्लत पर होने वाले मज़ालिम और ज़्यादतियों का तज़किरा करे आज तमाम बानियाने अज़ा पर लाज़िम है कि अपनी मजालिस में पढ़ने वालों को पाबन्द करें कि वह क़ौम में हौसला और जज़्बा बेदार करें और आपस में इख़्तेलाफ़ात को मिम्बर की ज़ीनत न बनाएं हमें इस वतने अज़ीज़ में इज़्ज़त ववक़ार के साथ रहना है तो सिवाए मुत्तहिद होने के और कोई रास्ता नहीं सिर्फ़ हम नहीं आज हमारा पूरा मुल्क दहशतगर्दों के हाथों ख़तरात का शिकार है और फितना व फ़साद के जहन्नम की तरफ़ ढकेला जा रहा है आईये अहद कीजिये कि अपने शोहदा के ख़ून को रायगाँ नहीं जाने देंगे दुश्मनाने दीन और दुश्मनाने पाकिस्तान की हर चाल को नाकाम बना देंगे और ख़ून के आख़िरी क़तरे तक परचमे अब्बास[अ०] को बुलन्द रखेंगे।

ज़माना माँग रहा है सुबूते इश्क़े हुसैन[अ०]
लहू से काटेंगे शमशीर लिख दिया जाए
सितमगरों की कलाई मरोड़ने के लिए
जबीने वक़्त पे शब्बीर[अ०] लिख दिया जाए

वस्सलाम
या अली मदद
हसन ज़फ़र नक़वी